## पद २६४

(राग: पिलु - ताल: दीपचंदी)

चल जाऊं रे बन आज कन्हैया।।ध्रु.।। लिये रोटी पाछे बांध सिदोरी। लिये कुछ आब दही दूध मलैया।।१।। गौवन भार गोविंद हाकारत। पाछे पुकरात जसोदा मैया।।२।। मानिक के प्रभु नाथ कृष्णजी। तोहे चरनन बल जाऊं बलैया।।३।।